रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १९: निमृत प्रभाव (विनम्रता की छाप)

'निमृत प्रभाव', 'विनम्रता की छाप', विनम्र फ़लसफ़ी की मिलनसारी अहंकारी दिलों को नरम करती है। 'तक्षशिला' की पथरीली पहाड़ियों में गुरु नानक अपने दार्शनिक शबदों से पथराई रूहों को मुलायम करते हैं।

अगम अगोचर अपर अपारा पारब्रहम परधानो ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

वह अथाह, दुर्गम, अनंत और अद्वितीय है। वह पारब्रह्म शिरोमणि है।
(राग आसा, गुरु नानक)

कुदरत के अजूबे मनुष्य की हाज़रा-हज़ूर के बारे में जिज्ञासा को बढ़ाते हैं जिसने अनंत सृजना की योजना तैयार की है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने श्रीनगर से हसन अब्दाल, टिल्ला जोगियां, सियालकोट के रास्ते पसरूर से तलवंडी वापसी की जो अब ननकाना साहिब जाना जाता है। इसके बाद वह सुल्तानपुर लोधी की ओर चल पड़े।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने श्रीनगर वादी के पश्चिम की ओर पहाड़ी इलाके से सफ़र किया और हसन अब्दाल पहुंचे।

मौजूदा दौर में कूटनीतिक नीतियों के कारण कश्मीर से इंडिया-पाकिस्तान की सरहद को पार नहीं किया जा सकता। इसलिये हम पंजाब के वाघा नाका पर गये और वहां से सरहद को पार कर के पाकिस्तान में हसन अबदाल से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र आगे बढ़ा रहे हैं।

हसन अबदाल, पाकिस्तान के पंजाब सूबे के ज़िला अटक का कस्बा है। इस कस्बे का नाम दो आदमियों के नाम पर पड़ा है; हसन चरवाहा था और अब्दाल फ़कीर था। कहा जाता है कि चरवाहे ने फ़कीर को गाय का

दूध पेश किया और शुक्राने के तौर पर फ़कीर ने नज़दीक के पहाड़ से पानी का झरना खोल दिया जिस से पानी की किल्लत वाले शहर की मदद हो सके।

दिलचस्प बात यह है कि सातवीं शताब्दी के चीनी यात्री ह्यून सांग ने लिखा है कि यह झरना एलापात्रा राजा के दौर का है।

अमरदीप सिंह: बाबा वली कंधारी अफ़ग़ानिस्तान के कंधार के फ़कीर थे जो हसन अबदाल में बस गये थे और एक पहाड़ी के शिख़र पर क़ियाम किया था जहां पानी का झरना था। यह दरगाह उन्हीं की याद में बनाई गई है।

बताया जाता है कि पहाड़ी के शिख़र वाला झरना, शहर के लिये निर्मल पानी का एकमात्र स्रोत था। बाबा वली कंधारी पहाड़ के शिख़र पर रहते थे। वह पानी भरने आये लोगों को उपदेश देते थे। दुर्भाग्य से, अपने पैरोकारों से तारीफ़ें सुनकर गुणवान रूहानी शख्स होने के बावजूद उन पर अहंकार सवार हो गया। उन्होंने अपना उपदेश को ना मानने वालों को पानी भरने से इंकार कर दिया।

कहा जाता है कि जब गुरु नानक और भाई मरदाना हसन अबदाल पहुंचे तो उन्हें अपनी प्यास बुझाने के लिये पानी नहीं मिला। जब बाबा वली कंधारी पर भाई मरदाना के पानी के लिये अनुरोध का कोई असर नहीं हुआ, तो गुरु नानक ने एक पत्थर हटा दिया जिसके नीचे से पानी का एक झरना बह निकला। इससे बाबा वली कंधारी उग्र हो गये। असुरक्षा की भावना और अपनी विश्वसनीयता के मिटने के डर से, उन्होंने पहाड़ से एक बड़ा शिलाखंड नीचे गिराया, जिसे रोकने के लिये गुरु नानक ने अपना हाथ उठाया। गुरुद्वारा पंजा साहिब की इमारत में पत्थर के एक तरफ हाथ का निशान गुरु नानक के हाथ की छाप माना जाता है।

दिलचस्प यह है कि पुरानी 'जन्मसाखियों' में इस वृतांत का ज़िक्र नहीं है। इसका ज़िक्र बाद में लिखी गई 'बाला जन्मसाखी' में आता है।

हसन अबदाल में अहसन अली से मुलाकात आनंदमयी रही जो एक शास्त्रीय गायक हैं। वह हमारे साथ गुरुद्वारा पंजा साहिब गये।

अमरदीप सिंह: हसन अबदाल में गुरुद्वारा पंजा साहिब गुरु नानक और भाई मरदाना के यहां आने और बाबा वली कंधारी के साथ संवाद की याद में बनाया गया था।

यह गुरुद्वारा अट्ठारह सौ इक्कीस में हरि सिंह नलवा द्वारा बनवाया गया था जो महाराजा रणजीत सिंह के नामवर जरनैल थे। स्थानीय सिख संगत ने उन्नीस सौ बीस के दौर में इस गुरुद्वारे की इमारत का विस्तार किया, एक स्कूल बनाया गया और बाहर की तरफ दुकानें बनाई गईं। जब उन्नीस सौ सैंतालीस में मज़हबी बुनियाद पर विभाजन हुआ तो गुरु नानक नामलेवा संगत पलायन करके विभिन्न इलाकों में चली गई।

यह संतोषजनक है कि मौजूदा दौर में स्कूल की इमारत और दुकानें स्थानीय मुस्लिम आबादी की शैक्षिक और वित्तीय ज़रूरतों को पूरा करने के साधन बन गई हैं।

गुरुद्वारे के चारों ओर बने इस 'सरोवर' का पानी एक प्राकृतिक झरने से आता है। दस्तूर यह है कि आने वाली संगत पंजे के निशान को श्रद्धा के साथ छूती है, 'सरोवर' के पानी की चुली लेती हैं और मुंह पर छींटे मारती हैं।

अमरदीप सिंह: माना जाता है कि हाथ की यह छाप गुरु नानक की है। मैं इसकी ऐसे व्याख्या करता हूं कि पत्थर की कठोरता मानव अहंकार की नुमाइंदगी करती है और इसके शिख़र पर लगी हुई यह हाथ की छाप विनम्रता के परम गुण की नुमाइंदगी करती है। यह दृश्य हमें परम मानवीय इच्छा का एहसास दिलाता है जो कि अहंकार की निम्नतम और अन्धकारमय स्तर से विनम्रता के उच्चतम मुकाम तक पहुंचने की लालसा करता है।

नानक बेड़ी सच की तरीऐ गुर वीचार ॥
इक आवहि इक जावही पूर भरे अहंकार ॥
मनहठ मती बूडीऐ गुरमुख सच सु तार ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

नानक ने फ़रमाया कि सच की नाव सोच-विचार और आत्म पड़ताल के माध्यम से पार ले जायेगी।
अहंकार से भरे हुए कई आते हैं और कई जाते हैं।
जिद्दी लोगों की मति मारी जाती है। रूहानी समझ वाला व्यक्ति सच्चे विवेक की प्राप्ति के माध्यम से तर जाता है।
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरु नानक के इस सबद और पत्थर पर लगे पंजे के निशान की कहानी के हवाले से एहसन अली की समझ यह पक्का करवाती है कि अगर कोई रूहानी शब्दों की गहराई समझने का प्रयास करता है तो फ़लसफ़े का सच्चा सार उभर कर सामने आ जाता है।

मेरी विनम्र समझ है कि गुरु नानक ने बाबा वली कंधारी और निवासियों के बीच जल विवाद पर 'गुरु विचार' के माध्यम से सलाह दी होगी।

इस पत्थर पर पंजे की हाथ की नरम छाप उस तब्दीली के रूपक के तौर पर नुमाइंदगी करती है जिसके तहत मानव स्वभाव की बेरुख़ी तब्दील हो कर हमदिली में बदल जाती है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने हसन अब्दाल से जेहलम ज़िले में टिल्ला जोगियां का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम हसन अब्दाल से टिल्ला जोगियां जा रहे हैं।

गुरु नानक के सम्मान में जेहलम ज़िले के जागीरदार, जनाब तालिब अपनी गाड़ी में हमें टिल्ला जोगियां ले कर गये जहां कच्चे पहाड़ी रास्तों से ही पहुँचा जा सकता है।

अमरदीप सिंह: तालिब, आपका हमें यहां टिल्ला जोगियां तक लाने के लिये धन्यवाद। यह हमारे लिये बहुत मायने रखता है। हमें वहां पहुँचने में कितना समय लगने वाला है?

नवाबज़ादा तालिब मेहदी: यह सफ़र तो ज़्यादा लम्बा नहीं। तकरीबन बीस से पच्चीस किलोमीटर का रास्ता है। यह सड़क बहुत ऊबड़-खाबड़ है और यह इलाका कीचड़ वाला और पथरीला है। हमें शिख़र पर पहुंचने में साढ़े तीन से चार घंटे लगेंगे।

टिल्ला जोगियां, पहली सदी का हिंदू मंदिर और भिक्षु विहार, समुद्र तल से बत्तीस सौ फीट की ऊंचाई पर है। यह नमक वाले इलाके में पोठोहार पठार की सबसे ऊंची चोटी पर बना है। कहा जाता है कि सदियों से हिंदू और मुसलमान फ़कीर इन पहाड़ों के एकांत में वास करते थे।

अमरदीप सिंह: दो हज़ार सालों से, और जब उन्नीस सौ सैंतालीस में भारतीय उपमहाद्वीप का इंडिया और पाकिस्तान में विभाजन हुआ तो टिल्ला जोगियां में गुरु गोरखनाथ के पैरोकारों का वास था जिन्हे 'कन फटे जोगी' कहते थे। फ़कीर बिखर गये और नई भूमि की ओर कूच कर गये।

यह उजाड़ और खंडहर इस आलीशान इमारत के गौरवशाली इतिहास की निशानियां हैं।

अमरदीप सिंह:

कानों में कुंडल पहन कर, माथे पर तिलक लगाकर। मुझे जोगी के साथ जाना है।

मुझे कानों में कुंडल पहन कर और माथे पर तिलक लगाकर जोगी के साथ जाना है।

टिल्ला जोगियां का ज़िक्र पंजाबी सूफ़ी शायरी में आता है। जब रांझे को अपनी महबूब हीर नहीं मिली तो उसने टिल्ले पर बसते 'कनफटे जोगियों' का सहारा मिला और उसने टिल्ले पर जा कर कान छिदवा लिये।

दुर्भाग्यवश 'हीर रांझा' की लोककथाओं को ग़लत समझा जाता है क्योंकि इसे अस्वीकृत प्यार की दर्दनाक कहानी माना गया है। जब रूपक के तौर पर इसके अर्थों को समझा जाता है तो इस के सामाजिक मानदंडों की बुनियाद हिला देने वाली सोच उजागर होती है। 'रांझा' एक आज़ाद ख़्याल नायक, रूह की नुमाइंदगी करता है जो समाज और मज़हब की बेड़ियों को तोड़कर रूहानियत की भव्यता के साथ एक हो जाना चाहता है। हीर बेख़ौफ़ नायिका है जो रूहानियत की भव्यता की नुमाइंदगी करती है।

अमरदीप सिंह: भाई गुरदास अपने वार में लिखते हैं।

राँझा हीर वखाणीऐ ओह पिरम पराती।
पीर मुरीदा पिरहड़ी गावन परभाती ॥
(भाई गुरदास)

रांझा और हीर मुक़्क़मल प्रेम और लगन की नुमाइंदगी करते हैं।
यह पीर और मुरीद के रिश्ते की तरह है जो हमेशा इत्तेफ़ाक में रहता है।
(भाई गुरदास)

चेले के गुरु के प्रति प्यार का ब्यान रांझा के हीर के प्रति प्यार के रूप में किया गया है।

राजा वकार: टिल्ला जोगियां की हर दौर में अपनी अहमियत रही है। यहां अलैकजेंडर से ले कर विभिन्न, अदबात में सिकंदर-ए-आज़म, ज़हीरुद्दीन बाबर तक, वे भी टिल्ला के इस मुकाम, जिस जगह पर हम आज खड़े हैं, यहां वे भी आये थे। बाबा गुरु नानक जी, वह भी यहां आये। यहां जोगी मज़हब का जो सिलसिला था, वह भी बहुत महफ़ूज़ था।

पहाड़ की इस चोटी पर ज़ियारतियों और लेखकों का आना-जाना था जिस कारण संगत के साथ गोष्ट करने के लिये गुरु नानक टिल्ला जोगियां आये थे।

अमरदीप सिंह: जब गुरु नानक और भाई मरदाना टिल्ला जोगियां पहुंचे तो उनका स्वागत बाबा बाल नाथ ने किया। बाबा बाल नाथ ने गुरु नानक से पूछा कि उनके गुरु कौन हैं और उनका मार्ग क्या है। गुरु नानक ने जवाब दिया,

सिध साधिक जोगी अरु जंगम एकु सिधु जिनी धिआइआ ॥
(गुरु नानक)

वह सिद्ध, साधक, जोगी, जंगम और ज़ियारती है जो वहदत का ध्यान करते हैं।
(गुरु नानक)

गुरु नानक ने संगत के साथ गोष्ट के दौरान रूहानी अगुवाई की अहमियत पर ज़ोर दिया जो आत्म पड़ताल, विवेक के अहसास या किसी गुरु के माध्यम से मिल सकती है। उन्होंने कहा कि रूहानी इल्म गृहस्थ जीवन जीते हुये भी हासिल किया जा सकता है। यह सिर्फ़ स्वयं को एकांत में रखने से ही हासिल नहीं होता है।

हम डोलत बेड़ी पाप भरी है पवण लगै मत जाई ॥
सनमुख सिध भेटण कउ आए निहचउ देहि वडिआई ॥१॥
गुर तार तारणहारिआ ॥
देहि भगत पूरन अविनासी हउ तुझ कउ बलिहारिआ ॥
(राग रामकली, गुरु नानक)

मेरी पापों से भरी मन की नाव डोल रही है। इन्द्रियां रूपी हवा के प्रवाह से मेरा ध्यान चारों ओर बिखरा है।
रूहानी तौर पर जागरूक मनुष्य आगे आता है। विवेक की महिमा हासिल करने और इससे सलाह लेने के लिये।
सच्चा विवेक अंधेरे से रौशनी के बदलाव में सहायक होता है।
हे हाज़रा-हज़ूर, मेरे को भक्ति से नवाज दो, मैं तुम्हारी हाज़रा-हज़ूरी से सब कुछ कुर्बान करता हूं।
(राग रामकली, गुरु नानक)

भाई काहन सिंह नाभा ने 'गुरशब्द रत्नाकर' में लिखा है कि गुरु नानक के सम्मान में 'जोगियों' ने टिल्ला जोगियां में उनके आने की यादगार बनाई थी।

सूफ़ी नाज़ेर बाबा: उस ज़माने में मलंग, जोगी, इस टिल्ले पर एक साथ रहते थे। अल्लाह की नज़र में, सब एक ही हैं।

हम टिल्ला जोगियां में पहाड़ी की तलहटी में उजाड़ पड़े गुरुद्वारे जा रहे हैं जो घाण नाला के किनारे बना है।

ਅਮਰਦੀਪ ਸਿੰਘ: टिल्ला जोगियां में 'जोगियों' के साथ गोष्ट करने के बाद आगे बढ़ने से पहले गुरु नानक और भाई मरदाना ने इस स्थान पर आराम किया जहां पानी का कुदरती झरना बहता था। बाद में महाराजा रणजीत सिंह के समय के दौरान गुरु नानक और भाई मरदाना के क़ियाम करने की याद में गुरुद्वारा चोआ बाबा गुरु नानक बनाया गया था। यह स्थान रोहतास किले के पास है।

सन उन्नीस सौ सैंतालीस के बंटवारे से पहले, इस गुरूद्वारे में पंजाब के फसल कटाई के त्योहार 'वैसाखी' के अवसर पर सालाना संगत इकट्ठा होती थी और उत्सव मनाती थी। सभी मज़हबों के लोग वैसाखी मनाने के लिये इस सताइस एकड़ ज़मीन पर आते थे जो इस स्थान का हिस्सा थी। सन उन्नीस सौ सैंतालीस के बाद यह स्थान वीरान हो गया और कई सालों तक यहां कोई यात्री नहीं आया।

शकील अहमद: मैं जेहलम शहर का रहने वाला हूं। मेरा नाम शकील है। दादी मेरी, वह बहुत समझदार थीं। गुरु नानक साहिब के बारे में बताती थीं कि यहां से उनका गुज़रना, आना-जाना रहता था। कभी बड़े बुज़ुर्गों से सुना था। एक शेयर पीढ़ियों से सीना-ब-सीना चला आ रहा, जो मैं भी सुनाता हूं,

नानक कहते हैं, जल और थल में रहने वाले को याद करो।

जन्म मरण के बंधन में बंधने वाले की पूजा क्यों करें?

परंपरा को आगे बढ़ाते हुये मैं इसे सुनाता हूं तो रूह तरोताज़ा रहती है।

जब दो हज़ार उन्नीस में गुरु नानक का पांच सौ पचासवां जन्मदिन दुनिया भर में मनाया गया तो लाहौर के नौजवान वास्तुकार रुबाब चिश्ती ने अपनी टोली बना करके पारंपरिक साज़ो-सामान का इस्तेमाल करते हुये इस गुरुद्वारे की मरम्मत शुरू की। यह दिलकश है कि यह स्थान इस इलाके की बिरादरियों में अनूरूपता बढ़ाने का ज़रिया बनेगा।

रुबाब फ़ातिमा चिश्ती: इस गुरुद्वारे की तहरीक़ और बाबा नानक के बारे में सोचते हुये, मैं बाबा नानक और बाबा फ़रीद के पुरखलूस रिश्ते की परतें खोलने लगी। यह प्रोजेक्ट और पूरा सफ़र हमारे लिये वरदान था। मुझे गुरु नानक का कलाम याद आया हैं,

साच रिदै सच प्रेम निवास ॥
प्रणवत नानक हम ता के दास ॥
(गुरु नानक)

ईमान भरे दिलों में सच्ची मुहब्बत बसती है।
नानक हलीमी से कहते हैं कि मैं उनका विनम्र सेवक हूं।
(गुरु नानक)

बाबा नानक कहते हैं कि जिनके दिलों में सच और सच्ची मुहब्बत है, मैं उनका सेवादार हूं।

मैं महसूस करती हूं कि मैं इस सिंधु दरिया की सभ्यता के इन रूहानी पीरों और संतों की नौकर हूं, जिन्होंने मानवीय इत्तेफ़ाक बढ़ाने के लिये प्यार का संदेश देते हुये अपनी जिंदगियां लगा दी।

किले, गुरुद्वारे और टिल्ला जोगियां की बड़ी वीरान इमारतें इस इलाके की बीते दौर की सियासी ताकत और इसकी रूहानी प्राप्तियों की निशानियां हैं।

समाज कामयाबी के पैमाने के तौर पर दौलत, शौहरत, रुतबे और ताकत को अहम मानता है। क्या इन मापदंडों के साथ सच्ची प्राप्तियों को मापा जा सकता है?

मन चंचल बिध नाही जाणै ॥
मनमुख मैला सबद न पछाणै ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

चंचल मन विधि से अनजान है।
मैल से भरे मनमुख से विवेक की पहचान नहीं होती।
(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक ने अपने शब्दों में 'मन' लफ़्ज़ का इस्तेमाल किया है जिसका मायना दिमाग या दिल समझा जाता है। भारतीय परंपरा में इसका मायना शऊर और अहंकार का मिश्रण है जो फ़ैसला करने वाला शोयबा है। गुरु नानक ने कहा कि सच्ची प्राप्ति तो 'मन' की नैतिक मध्यस्थ के तौर पर पहरेदारी करना है ताकि रचनात्मक सोच से किसी अन्य तरफ ना भटके।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने टिल्ला जोगियां से पूर्व की ओर सियालकोट का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर जेहलम और चिनाब नदियों को पार करके अब हम टिल्ला जोगियां से सियालकोट जा रहे हैं।

सियालकोट पाकिस्तान का औद्योगिक और सौदागरी का केंद्र है। यह विभिन्न हुक्मरान और मज़हबों का गवाह रहा है। सियालकोट का ज़िक्र मदरा सल्तनत की राजधानी के तौर पर आता है जिस की बुनियाद राजा शल्य ने रखी थी जो 'कौरवों' की फ़ौज का जरनैल था। महाभारत के महाकाव्य में कौरव सौ भाई थे। लेखागार के दस्तावेज़ बताते हैं कि जब महान सिकंदर ने दूसरी सदी ईसा पूर्व में सिंधु के इलाके पर हमला किया तो सियालकोट की पहचान सगला के तौर पर थी।

हम सियालकोट में ‘गुरुद्वारा बाबे दी बेर’ जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: सियालकोट में पहुंचकर गुरु नानक ने बेर के दरख़्त के नीचे आराम किया था। इस स्थान पर गुरु नानक के आगमन की याद में 'गुरुद्वारा बाबा दी बेर' बनाया गया था।

गुरु नानक का फ़लसफ़ा कायनाती है। यह जब समझ आता है तो विभिन्न मज़हबों वाले लोगों के दिलों को छू जाता है। यह तख़्ती गवाही देती है कि दाता राम नाम के हिंदू ने खुले दिल से सहयोग दिया। इस उजाड़ सरोवर की दीवारों पर गुरु नानक का वहदत का संदेश, < लिखा है। यह सरोवर कभी 'गुरुद्वारा बाबे दी बेर' की इमारत की सीमा के भीतर था। मज़हब की बुनियाद पर उन्नीस सौ सैंतालीस में उपमहाद्वीप के हुये विभाजन के बाद हिंदू और सिख बिरादरियां यहां से उजड़ गई तो यह गुरुद्वारा मरम्मत ना होने की वजह से खंडहर हो गया।

इसके बाद अल्लाह मोहम्मद नाम के मुहाज़िर ने गुरुद्वारे के प्रांगण में पनाह ली। वह रूहानी झुकाव वाले मनुष्य थे और समय के साथ उनकी काफी मान्यता हो गई। उनकी मृत्यु के बाद, उनके श्रद्धालुओं ने उन्हें गुरुद्वारे के परिसर में दफ़ना दिया। हालिया वर्षों में ही सरकार और सियालकोट ज़िले की थोड़ी सी सिख और हिंदू आबादी की मदद से इस गुरुद्वारे के मुख्य इमारत की मरम्मत की गई है। अब इस गुरुद्वारे में सेवा बहाल हो गई है।

'गुरुद्वारा बाबे दी बेर' के एक सेवादार आकाश सिंह हमें पास के एक कब्रिस्तान में ले गये, जो पीर हमज़ा गौंस के यादगार के परिसर में पड़ता है।

अमरदीप सिंह: अपने सियालकोट में प्रवास के दौरान, गुरु नानक को पीर हमज़ा गौंस नाम के महबूब सूफ़ी संत के बारे में पता लगा। पीर ने चालीस दिन तप करने के लिये अपने-आप को इस स्थान पर तालाबंद कर लिया था।

'चिल्ला' शब्द भारतीय अंक चालीस से बना है। यह माना जाता है कि आदत को तोड़ने के लिये बीस दिन लगते हैं और बीस दिन ही नई आदत डालने में लगते हैं। रूहानी वृद्धि की आशा में कई मज़हबों में चालीस दिनों के तप का दस्तूर है। इस दस्तूर की सिफ़ारिश तो चरित्र निर्माण के लिये की गई थी परन्तु इसमें से रचनात्मक इरादा नकारात्मक हो गया। यह मज़हबी कर्मकांड वाले कर्म के तौर पर सामने आया तो इस तप को पूरा करने वाले कुछ श्रद्धालुओं में अहंकार घर करने लगा।

गुरु नानक ने रूहानी गोष्ट के दौरान विस्तार से बताया कि व्रत और परहेज़ जैसे कर्मकांड से मन और दिल में रहमदिली का वास नहीं हो जाता। यदि विनाशकारी सोच से परहेज़ किया जाये तो अहंकार की भूख मिट जाती है।

अमरदीप सिंह: जब गुरु नानक की पीर से मुलाकात हुई तो उन्होंने उससे कहा,

वरत तपन कर मन नही भीजै ॥
(गुरु नानक)

उपवास और तपस्या से मन तृप्त नहीं होता।
(गुरु नानक)

बुनियादी तौर पर इसका यह मायने है कि दिल में रहम का वास तप से ज़्यादा अहम है।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक और भाई मरदाना ने टोली के तौर पर लोगों को गहरा संदेश पहुंचाने का काम बहुत ख़ूबसूरती से किया। सियालकोट में गुरु नानक ने भाई मरदाना को दो पैसे दिये और उन्हें सच और झूठ ख़रीद कर लाने के लिये कहा। भाई मरदाना सारे बाज़ार में गये तो हर कोई चकित हो गया। जब वह मूला खत्री की दुकान पर गये तो मुला खत्री ने कागज़ पर लिख दिया, "मौत सच है। ज़िंदगी झूठ है।"

मूला खत्री का जवाब गुरु नानक की सोच से मेल खाता था। उनके गंभीर जवाब से प्रसन्न हो करके गुरु नानक ने शबद गाया,

जिउ आइआ तिउ जावहि बउरे जिउ जनमे तिउ मरणु भइआ ॥
जिउ रस भोग कीए तेता दुखु लागै नामु विसारि भवजलि पइआ ॥१॥
तनु धनु देखत गरबि गइआ ॥
कनिक कामनी सिउ हेतु वधाइहि की नामु विसारहि भरमि गइआ ॥
(राग रामकली, गुरु नानक)

ओ बौराना, तू जैसे आया हैं, तुझे उसी तरह जाना है। जैसे तू पैदा हुआ है, उसी तरह मर जाना है।

जिस तरह तू सुख भोग रहा हैं, उसी तरह दुःख भोगने पड़ेंगे। यदि तू आत्म पड़ताल का पल्ला छोड़ देगा, तो भवजल में फंस जायेगा।
तू अपनी देह और दौलत का मान करता हैं।
तेरा पदार्थ का प्यार और लालसा बढ़ती जायेगी। आत्म पड़ताल को भूलाकर तू भृम में फंस जायेगा।
(राग रामकली, गुरु नानक)

मूला खत्री ने भी गुरु नानक और भाई मरदाना की मेहमान-नवाज़ी की।

मूला खत्री के साथ गुरु नानक की सांझ की याद में बनाया गया गुरुद्वारा उन्नीस सौ सैंतालीस के विभाजन में उजाड़ हो गया था। दिलचस्प बात यह है कि अब इस गुरुद्वारे में नेत्रहीन छात्रों के लिये स्कूल चलता है।

मैं महसूस करता हूं कि चाहे मैं आंखों से देख सकता हूं परन्तु रूहानी पक्ष से अंधा हूं।

मै अंधुले नामु न वीसरै टेक टिकी घरि जाउ ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

मैं नेत्रहीन हूं। मैं आत्म पड़ताल का रास्ता कभी नहीं भूलूं। इसी की हिफ़ाज़त में मनुष्य चैन के घर में वास करता है।
(सिरी राग, गुरु नानक)

सफ़र मानव प्रगति का बेहतरीन ज़रिया है बशर्ते साथियों का झुकाव रूहानी हो। मूला खत्री ने कुछ दिन सियालकोट से आगे के सफ़र में गुरु नानक और भाई मरदाना का संग किया।

गुरु नानक, भाई मरदाना और मुला खत्री ने सियालकोट से पसरूर का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम सियालकोट से पसरूर जा रहे हैं जो सियालकोट ज़िले में है। अब हम गुरु नानक और फ़कीर मियां मीठा की मुलाकात की याद में बने स्थान पर जा रहे हैं ।

कहा जाता है कि मियां मिट्ठा, शहर के आदरणीय रूहानी शख़्स थे। वह गुरु नानक और भाई मरदाना के आने की ख़बर सुनकर उन्हें मिलने पहुंचे। गोष्ट के दौरान उन्होंने गुरु नानक से पूछा कि अगर तेल के बिना दीपक नहीं जल सकता तो पैगंबर के बिना मुक्ति कैसे मिल सकती है। जवाब में, गुरु नानक ने गाया,

पोथी पुराण कमाईऐ ॥ भउ वटी इतु तनि पाईऐ ॥
सचु बूझणु आणि जलाईऐ ॥
इहु तेलु दीवा इउ जलै ॥
करि चानणु साहिब तउ मिलै ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

पोथियों में से विवेक की कमाई करो। अपने जिस्म में संयम को ज्ञान की बत्ती बनाओ।
सच को जानने के लिये अपने अंदर आग जलायें।
सोच-विचार के तेल से विवेक का दीपक जगाओ।
अपने आप को रोशन करके तुम सर्वव्यापक को मिल सकते हो।
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरु नानक का यकीन था कि सच्चे कर्म, हाज़रा-हज़ूर की अकीदत में किये गये कर्म हैं। उन्होंने अपने शबद में कहा है कि ग्रंथ पढ़ना सहायक होता है और रूहानी रहबर फ़ायदेमंद है परन्तु सबसे अहम अच्छे व्यवहार वाले गुण हैं जो दीपक समान हैं जिनकी रौशनी मनुष्य की अपनी और दूसरों की रूह रौशन करती है।

सन उन्नीस सौ सैंतालीस के बंटवारे में सिख और हिंदू पाकिस्तान से पलायन कर गये और यह गुरुद्वारा मरम्मत ना होने के कारण खंडहर हो गया। अब उस इमारत का कुछ हिस्सा ही बचा है।

वैश्विक भाईचारा सारे मज़हबी फ़लसफ़ों की बुनियादी विशेषता है, परन्तु इतिहास में दर्ज है कि सियासी लालसाओं ने मज़हब के नाम पर ही बंटवारे कर डाले हैं।

ऊद बिलाव में निराली विशेषता होती है। वह अपने इलाके की निशानदेही अपने जिस्म की महक से गुंथी मिट्टी की महकदार खंदक बनाकर करता है। मनुष्य के अंदर भी ख़ुदाई विवेक की महक निहित है परन्तु ऊद बिलाव की तरह मनुष्य अपने बंटवारे की निशानदेही पहचान की हदें बनाकर करते हैं।

गुरु नानक ने कहा कि आत्म पड़ताल की रहमत से अहंकार की खंदक गिर जाती हैं और इत्तेफ़ाक की शाश्वत महक भर जाती है।

कर किरपा घर महल दिखाइआ ॥
नानक हउमै मार मिलाइआ ॥
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

उसकी कृपा से मनुष्य को अपने अंदर के अलौकिक घर का अहसास होता है।
नानक ने फ़रमाया है कि अहंकार को मारकर मनुष्य का अपने-आप से मेल होता है।
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना, मूला खत्री समेत पसरूर से तलवंडी के लिये निकल पड़े, जो उनका अपना कस्बा था और अब ननकाना साहिब के तौर पर जाना जाता है।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम पसरूर से ननकाना साहिब जा रहे हैं।

गुरु नानक और भाई मरदाना अपनी दूसरी उदासी पूरी करने के बाद तलवंडी लौटे थे। पहली उदासी के पूरा होने और तीसरी उदासी के शुरू होने के तिकोने हिसाब के साथ अंदाज़ा होता है कि दूसरी उदासी चार साल में पूरी हुई होगी। दूसरी उदासी अंदाज़न पंद्रह सौ सत्रह ईस्वी में शुरू हुई और पंद्रह सौ बीस ईस्वी में समाप्त हुई जब गुरु नानक की उम्र इक्यावन वर्ष थी।

गुरु नानक की माता तृप्ता इतने समय बाद अपने बच्चे को देखकर बहुत ख़ुश थी। उनकी इच्छा थी कि अपने प्यार के इज़हार के तौर पर उनके पसंदीदा पकवान बना कर के खिलायें।

गुरु नानक ने अपने सफ़र के दौरान रूहानी पकवानों का स्वाद लिया था। वह संतोख से तृप्त थे और दुनियादारी के स्वादों की लालसा ख़त्म हो गई थी। उनकी रूह को संतोष और सामाजिक इत्तेफ़ाक की ख़ुराक का स्वाद पसंद आ गया था और वह वहीं चाहते थे।

बाबा होर पैनण खुसी खुआर ॥
जित पैधै तन पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥

रता पैनण मन रता सुपेदी सत दान ॥
नीली सिआही कदा करणी पहिरण पैर धिआन ॥
कमरबंद संतोख का धन जोबन तेरा नाम ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

ओ बाबा सुनो, दुनियादारी स्वादों की ख़ुशी खुमारी है।
इनसे तन में दर्द होता है और मन में विकार जागते हैं।
रचनात्मक सोच से मन वहदत के प्यार में लीन हो जाता है। सच और पुण्य ही साफ़-सुथरा लिबास हैं।
बदनियती की कालिख़ मिटाकर सोच-विचार का कपड़ा धारण करो।
संतोष ही मेरा कमरबंद है। आत्म पड़ताल ही धन और योवन है।
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना से इजाज़त ले कर मूला खत्री वापिस सियालकोट लौट गये।

गुरु नानक और उनके परिवार ने उनकी बहन बेबे नानकी से मिलने के लिये सुल्तानपुर लोधी का सफ़र किया।

हम वाघा नाके से इंडिया जा रहे हैं और सुल्तानपुर लोधी से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र आगे बढ़ायेंगे।

बेबे नानकी और सुल्तानपुर लोधी के लोगों ने गुरु नानक का गर्मजोशी से स्वागत किया। जब उनके आने की ख़बर हाकिम दौलत ख़ान लोधी के पास पहुंची तो वह खुद गुरु नानक को सम्मान देने पहुंचे। उन्होंने गुरु नानक से सफ़र के तजुर्बे और उनके बसने के मंसूबों के बारे में पूछा। जवाब में गुरु नानक ने गाया,

मुकाम कर घर बैसणा नित चलणै की धोख ॥
मुकाम ता पर जाणीऐ जा रहै निहचल लोक ॥
दुनीआ कैस मुकामे ॥
कर सिदक करणी खरच बाधहु लाग रहु नामे ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

अपने अस्तित्व के मुकाम को अंतिम मंज़िल समझने से बंदा मृत्यु के ख़ौफ़ से घिरा रहता है।

इसे पक्का निवास माना जाये अगर ब्रह्माण्ड में बदलाव ना हो।
यह दुनिया कैसा मुकाम हो सकती है?
सिदक के साथ काम करो। अच्छे कामों में समय खर्च करो और सोच-विचार के साथ जुड़े रहो।
(सिरी राग, गुरु नानक)

घर वह बुनियादी ढांचा है जिससे रहने वाले को आराम और सुरक्षा का अहसास होता है। गुरु नानक ने अपने रूहानी ढांचे का सृजन कर लिया था, जिस में समूची सृष्टि को घर के तौर पर एक परिवार बना लिया था। वह हर उस जगह रहते थे जहां प्यार का वास था।

सुल्तानपुर लोधी में परिवार के साथ समय बिताने के बाद, गुरु नानक ने अगली उदासी पर जाने का फ़ैसला किया जिसके तहत मुसलमानों के ज़ियारत वाले स्थानों का सफ़र करना था। भाई मरदाना ने गुरु नानक के साथ पश्चिम की ओर जाने के लिये सहमति दे दी।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर सफ़र करने वाले मुसाफ़िर के तौर पर मेरे ऊपर अनंत मेहरबानी हुई है परन्तु मेरा मन उस पर टिकता है जो मेरे को नहीं मिला। मैं कैसे इन बख्शीशों से तृप्त हो जाऊं और लालसा ना रखूं?

जेवड साहिब तेवड दाती दे दे करे रजाई ॥
नानक नदर करे जिस उपर सच नाम वडिआई ॥
(राग माझ, गुरु नानक)

साहिब की तरह ही उसकी मेहरबानियां हैं जो अपनी सृजना को तृप्त करने के लिये बख्शीशों का अंतहीन प्रवाह हैं।
नानक ने फ़रमाया कि जो मेहरबानियों की नदर कबूल कर लेते हैं, उन्हें सच्चा गौरव मिलता है।
(राग माझ, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १९: निमृत प्रभाव (विनम्रता की छाप)

चर्चा के संकेतक गुरु नानक की यात्रा के समृद्ध ऐतिहासिक और दार्शनिक आयामों की पड़ताल करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं, जैसा कि इस एपिसोड में प्रस्तुत किया गया है। हसन अब्दाल, टिल्ला जोगियां और सियालकोट जैसे महत्वपूर्ण स्थानों की उनकी यात्राओं की समीक्षा करके, हम सोलहवीं सदी के उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और उन वार्तालापों के दौरान साझा की गई गुरु नानक की कालातीत बुद्धिमत्ता को समझते हैं। यह दार्शनिक जिज्ञासा दर्शाती है कि गुरु नानक ने निरंतर विनम्रता, आंतरिक परिवर्तन और अहंकार पर विजय को रुहानी विकास के आवश्यक तत्वों के रूप में बल दिया। उन्होंने अनुष्ठानिक प्रथाओं और लोगों के बीच विभाजन को भी चुनौती दी। संतोष, अस्तित्व की क्षणभंगुरता और सार्वभौमिक भाईचारे पर उनकी दर्शनशास्त्र आज भी प्रासंगिक है, जो मानव अनुभव की जटिलताओं को बुद्धिमत्ता और करुणा के साथ समझने में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. **गुरु नानक की हसन अब्दाल यात्रा के ऐतिहासिक वृत्तांत हमें उनकी यात्राओं के विवरणों की प्रमाणिकता की चुनौती पर सोचने के लिए कैसे प्रेरित करते हैं?**
   इस एपिसोड में गुरु नानक और बाबा वली कंधारी के बीच हसन अब्दाल में हुई वार्तालाप का वर्णन है। इस मुलाकात के दौरान, ऐसा कहा गया है कि गुरु नानक ने एक चट्टान हटाकर जल स्रोत उत्पन्न किया और एक विशाल पत्थर को अपने हाथ से रोक दिया, जिससे उनके हथेली का निशान उस पर रह गया। हालांकि, यह वृत्तांत प्रारंभिक 'जनमसाखियों' में नहीं आता, बल्कि केवल बाद की 'बाला जनमसाखी' में पाया जाता है। यह तथ्य गुरु नानक से संबंधित ऐतिहासिक स्मृति के विकास के बारे में हमें क्या बताता है, और हमें इन स्मृति-आधारित वृत्तांतों से कैसे जुड़ना चाहिए?

२. **टिल्ला जोगियां स्थल का ऐतिहासिक महत्व क्या है, और गुरु नानक ने इस रुहानी परंपरा के अनुयायियों के साथ कैसे वार्तालाप की?**
   इस एपिसोड में टिल्ला जोगियां को प्रथम शताब्दी का एक हिन्दू मंदिर और मठ परिसर बताया गया है, जो नमक पर्वतमाला में पोटोहार पठार की सबसे ऊँची चोटी पर, ३,२०० फीट की ऊँचाई पर स्थित है।

यह स्थल दो हज़ार वर्षों तक, १९४७ तक, गुरु गोरखनाथ के अनुयायियों 'कनफट्टा जोगियों' का निवास रहा। जब गुरु नानक वहाँ पहुँचे, तो बाबा बाल नाथ ने उनका स्वागत किया। गुरु नानक का इस प्राचीन तपस्वी परंपरा से जुड़ाव उनके विभिन्न रुहानी अभ्यासों के प्रति दृष्टिकोण को कैसे दर्शाता है?

३. १९४७ में भारतीय उपमहाद्वीप के विभाजन ने गुरु नानक की यात्रा से जुड़े स्थलों के संरक्षण और स्मरण को कैसे प्रभावित किया?

एपिसोड में बार-बार उन छोड़े गए और खंडहर हो चुके गुरुद्वारों को उजागर किया गया है जो १९४७ में धर्म-आधारित विभाजन के परिणामस्वरूप उपजे विस्थापन के कारण उपेक्षित हो गए। उदाहरणस्वरूप, टिल्ला जोगियां के पास चोआ बाबा नानक गुरुद्वारा और सियालकोट का बेबे-दे-बेर गुरुद्वारा इस अशांत समय में सिख और हिन्दू समुदायों के विस्थापन के बाद जर्जर हो गए। इन गुरुद्वारों के संरक्षण के लिए कौन-कौन से प्रयासों का उल्लेख किया गया है, और ये प्रयास इस साझा विरासत को लेकर समकालीन दृष्टिकोण के बारे में क्या प्रकट करते हैं?

४. इस एपिसोड में गुरु नानक और अन्य धर्मों के मार्गदर्शकों के बीच कौन-कौन से ऐतिहासिक वार्तालाप प्रस्तुत किए गए हैं?

एपिसोड में गुरु नानक के विभिन्न रुहानी नेताओं से हुए संवादों का उल्लेख है, जिनमें शामिल हैं – अफ़ग़ान सूफ़ी बाबा वाली कंधारी; टिल्ला जोगियां के जोगी; सियालकोट में पीर हमज़ा ग़ौस; और पसरूर में फ़क़ीर मियां मिठ्ठा। ये विविध वार्तालाप धर्मनिरपेक्ष परिवेश में अंतर्धार्मिक वार्तालाप के प्रति गुरु नानक के दृष्टिकोण को कैसे उजागर करते हैं?

५. गुरु नानक की दौलत ख़ान लोधी जैसे राजनीतिक व्यक्तित्वों के साथ हुई वार्तालाप उनके सामाजिक प्रभाव को कैसे दर्शाती है?

एपिसोड में उल्लेख है कि जब गवर्नर दौलत ख़ान लोधी को गुरु नानक के आगमन की सूचना मिली, तो वे स्वयं उन्हें सम्मान देने आए। उन्होंने गुरु नानक से उनकी यात्राओं और स्थायी निवास की योजना के बारे में पूछा। एक उच्च पदस्थ अधिकारी द्वारा इस प्रकार का स्वागत उनके जीवन के इस चरण में गुरु नानक की प्रतिष्ठा और प्रभाव के बारे में क्या संकेत देता है?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की बाबा वली कंधारी के साथ हसन अब्दाल में हुई वार्तालाप उनके विनम्रता और अहंकार के बीच के गहरे अंतर की समझ को कैसे उजागर करती है?

एपिसोड एक ऐतिहासिक वृत्तांत प्रस्तुत करता है जिसमें बाबा वली कंधारी अपने अनुयायियों की प्रशंसा से अहंकारी हो गए थे और जो लोग उनकी शिक्षाओं का पालन नहीं करते थे, उन्हें पानी देने से इनकार करने लगे थे। एहसन अली चट्टान पर बने हथेली के निशान को विनम्रता की परम दिव्य गुण के प्रतीक के रूप में देखते हैं, जबकि पत्थर को मानव अहंकार के अंधकार का प्रतीक मानते हैं। यह वृत्तांत एपिसोड के शीर्षक "निमृत प्रभाव" (विनम्रता की छाप) को कैसे मूर्त रूप देता है?

२. टिल्ला जोगियां में तपस्वियों के साथ गुरु नानक की वार्तालाप उनके रुहानी अभ्यासों और दैनिक जीवन के सामान्य कार्यों के बीच संबंध पर उनके दृष्टिकोण को कैसे उजागर करती है?

एपिसोड में बताया गया है कि गुरु नानक ने यह अवलोकन किया कि रुहानी ज्ञान एक गृहस्थ के रूप में रहते हुए भी प्राप्त किया जा सकता है, न कि केवल एकांतवास द्वारा। जब जोगियों ने उनसे उनके गुरु और मार्ग के बारे में पूछा, तो गुरु नानक ने उत्तर दिया कि आत्म-चिंतन उनके गुरु हैं और एकत्व उनका मार्ग है। यह दृष्टिकोण परंपरागत अवधारणा को कैसे चुनौती देता है कि रुहानीता पाने के लिए सांसारिक कार्यों से विरक्त होना आवश्यक है?

३. सियालकोट में हुआ एपिसोड गुरु नानक के मूला खत्री के साथ वार्तालाप के दौरान जीवन और भौतिक वस्तुओं की क्षणभंगुरता पर उनके दृष्टिकोण को कैसे प्रतिबिंबित करता है?

जब मूला खत्री से सत्य और असत्य लाने को कहा गया, तो उन्होंने चिंतन करके उत्तर दिया कि मृत्यु सत्य है और जीवन असत्य। गुरु नानक ने इस दृष्टिकोण को स्वीकार करते हुए कहा कि जैसे व्यक्ति आता है, वैसे ही वह चला जाता है। शरीर और धन पर केंद्रित रहना घमंड की ओर ले जाता है। जब व्यक्ति भौतिकवाद और सुख में लिप्त हो जाता है, तो वह आत्म-चिंतन से दूर हो जाता है और संदेह में फँस जाता है। यह गुरु नानक के भौतिक वस्तुओं के प्रति मोह पर कौन-सा दार्शनिक दृष्टिकोण प्रकट करता है?

४. पीर हमज़ा ग़ौस और फ़क़ीर मियां मिठ्ठा के साथ हुई चर्चा में गुरु नानक का धार्मिक अनुष्ठानों के प्रति दृष्टिकोण कैसे प्रकट होता है?

गुरु नानक ने पीर हमज़ा ग़ौस, जो चालीस दिन की तपस्या में लगे हुए थे, से कहा कि उपवास और तपस्या से मन को कोमल नहीं किया जा सकता। जब मियां मिठ्ठा ने पूछा कि बिना किसी नबी के मुक्ति कैसे पाई जा सकती है, तो गुरु नानक ने ज्ञान की बातों के माध्यम से उत्तर दिया — कि ज्ञान की बाती बनाओ और उसे शरीर के भीतर रखो जिससे वह आंतरिक अग्नि जले और सत्य की प्राप्ति हो। ये उत्तर उनके धार्मिक अनुष्ठानों और मध्यस्थों के प्रति दृष्टिकोण को कैसे दर्शाते हैं?

५. अपने परिवार के पास लौटने पर साझा किए गए सबद में गुरु नानक सच्चे संतोष को कैसे परिभाषित करते हैं?

जब उनकी माता ने उनके प्रिय भोजन बनाने की इच्छा जताई, तो एपिसोड से पता चलता है कि यात्रा के दौरान रुहानी आनंद का अनुभव कर चुकी उनकी आत्मा संतुष्ट थी और अब सांसारिक सुखों की कोई चाह नहीं रही। उन्होंने एक सबद में इस भावना को व्यक्त किया कि भौतिक सुखों में लिप्त होना भटकाने वाला है, क्योंकि ये शारीरिक कष्ट और विकृत मन की ओर ले जाते हैं। उन्होंने कहा कि सच्चा संतोष एक सहारा देने वाली कमरबंद के समान है, जबकि आत्म-चिंतन में ही असली धन और सौंदर्य निहित है। यह उनके सच्चे संतोष के दर्शन के बारे में क्या प्रकट करता है?

६. जब गुरु नानक "मन" को नैतिक न्यायाधीश कहते हैं, तो उनका आशय क्या होता है जो निरंतर सतर्कता और जागरूकता की माँग करता है?

एपिसोड में बताया गया है कि गुरु नानक अपने सबदों में 'मन' शब्द का प्रयोग करते हैं, जिसे सामान्यतः मन या हृदय के रूप में समझा जाता है। भारतीय परंपरा में 'मन' को बुद्धि और अहंकार का संयोग माना जाता है, जो निर्णय लेने की शक्ति के रूप में कार्य करता है। गुरु नानक कहते हैं कि सच्ची उपलब्धि तभी होती है जब 'मन', नैतिक निर्णयकर्ता के रूप में, सकारात्मकता की आंतरिक प्रेरणा से भटकने न पाए और सतर्क बना रहे। यह अवधारणा आत्म-चिंतन के अभ्यास पर उनके ज़ोर से कैसे जुड़ी है?